बुरे समय में नींद

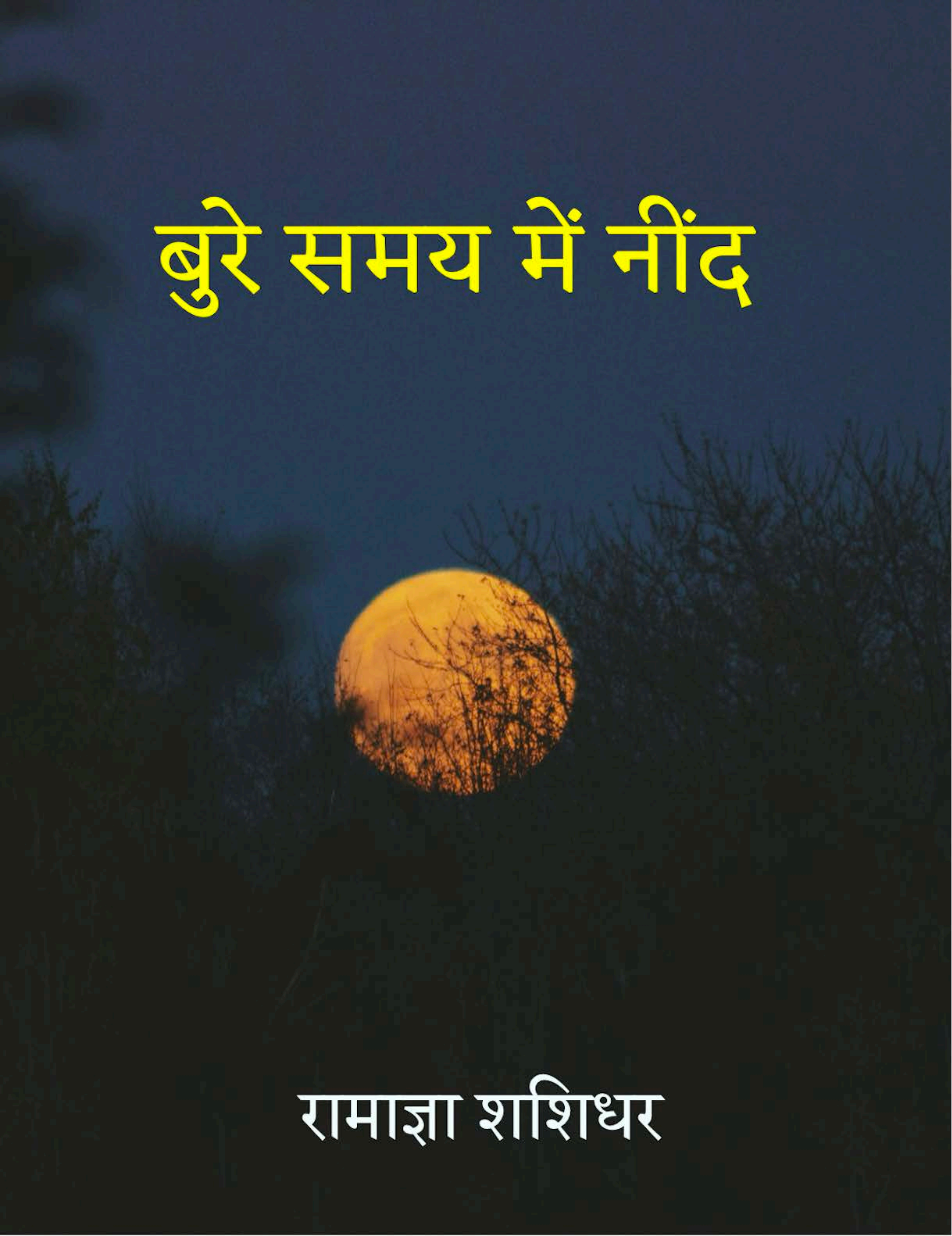

रामाज्ञा शशिधर

बुरे समय में नींद

कविता संग्रह

रामाज्ञा शशीधर

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2024

© रामाज्ञा शशीधर

लोककंठी माँ के लिए

कविता घाट

मैं सिमरिया घाट में जन्मा, पला और सामने घाट में रहता हूँ। नदी से मेरा जीवन-मरण का जरूरी रिश्ता है। नदी पट मेरी जन्मभूमि और क्रियाभूमि है। नदी मेरी कविता की प्रेरणाभूमि है। मेरी कविता में मौजूद संवेदना, रूप और लय नदी की संवेदना, रूप और लय से बंधे हुए हैं।

मुझे सबसे ज्यादा माँझी के हाथों मचलती नाव वाली नदी बाँधती है, मुक्त करती है और सम्मोहन के नए संसार में ले जाती है।

आदि कवि से मुझ तक हर कवि एक माँझी है। एक ही नाव, एक ही नदी एक ही दिशा है कविता की जिस पर सवार होकर, वह चल रहा है। वही आदिम वासना, राग, लय, रूप, रस, रंग, गंध और स्पर्श… परम्परा और क्या है?

और युगांतर माँझी का बदलता हुआ बोध नाव के तख्त और कांटियाँ, पानी का प्रवाह और लहरों के आवर्त।

सामने घाट की सुबहें और सिमरिया घाट की शामें मेरी स्मृति, मति और कल्पना के तिलस्मी स्रोत हैं। सिमरिया घाट की गंगा सामने घाट छूकर होती हैं। सिमरिया घाट का पानी मेरी चेतना में निर्माण, ध्वंस, संघर्ष, आतंक से मिश्रित रहस्य बनाता है और सामने घाट का उमंग, उछाह, यंत्रणा और विरह की लहरें उपजाता है।

मैं अक्सर सिमरिया घाट के तटों पर शाम को जादुई नाव में सवार होकर समुद्र जैसे जल के सहारे कोमल लाल सूरज तक पहुँचता था और वहाँ से कविता का कोई नया खनिज लेकर लौट आता था। सामने घाट कला के इन क्षणों के आनन्द की इजाज़त सुबहे - बनारस के साथ देता है। तब मुझे लगता है कि मैं कविता का एक माँझी हूँ।

सच्चा नाविक वही है जो नाव के भँवर और तूफान में फँसने, डूबने, भटकने और पार होने के डर से किनारे पर बैठकर जीवन बर्बाद नहीं कर लेता।

रेत तो कहीं भी बटोरा जा सकता है लेकिन नदी में चले और धँसे बिना न तो घोंघे, सितुए मोती और मछलियाँ मिल सकती हैं तथा न स्वप्न लहरों का अनहद नाद ही।

कविता का कच्चा माल मुझे तब से मिलना शुरू हुआ जब मैं भैंस की पीठ पर सवार होकर नदी, कास, झौए नाव, घड़ियाल, खरबूजे, खोपड़ी और कफन से मिलने जाता था तथा उसका मँजाव ग्रामीण कवि दिनकर के उत्सव मँचों से होता था।

मेरी कविताओं की पहली नाव भूमंडल और कमंडल से उठी आँधी के खिलाफ 1991 में 'आँसू के अंगारे' के नाम से आई। पारम्परिक शिल्प और भाषा। अनुभूति नई, सच्ची पर कच्ची। सात रुपए मूल्य। एक दशक बाद 2001 में दूसरी नाव- 'विशाल ब्लेड पर सोई हुई लड़की'- तब आई जब मैं भैया एक्सप्रेस पर सवार

बेगुसराय और दिल्ली के बीच झटके खा रहा था। नाव का समान लक्ष्य भूमि-पाठक वर्ग-तक व्यवस्थित ढंग से नहीं पहुँच पाया।

एक दशक बाद तीसरी नाव आपके सामने है। इस बार तीसरी नाव पर दूसरी नाव की कुछ कविताएँ सवार हैं। सामने घाट और सिमरिया घाट की नावों पर सवार कविताएँ रचना समय या रचना भूगोल के चलते नहीं बल्कि रचना संवेदना के कारण वहाँ मौजूद हैं।

मैं सामने घाट का पानी छूकर जन्म भूमि की नदी को ही छूता हूँ। जिस लहर को मैं बनारस में चूमता हूँ, क्या पता मेरे चाहने वाले मेरे जनपद में उसी आवर्त का स्पर्श करते हों। मेरे माँ बाबूजी काग़ज़ पढ़ना नहीं जानते लेकिन पानी पढ़ने के उस्ताद हैं।

उम्मीद करता हूँ नाव, असबाब और मांझी को उन सबका प्यार मिलेगा जिन्हें नदी से किसी भी तरह का लगाव है।

रामाज्ञा शशिधर

हिन्दी विभाग,

बी एच यू वाराणसी,

उ. प्र.

अनुक्रम

कविता में धान	12
सूरन	14
विदर्भ	17
खेत	18
सेवाग्राम	19
नग्नता	21
ब्रांड	22
रेशम के कीड़े	23
धागे	24
बनारसीदास	26
नया आपातकाल	28
वे बुद्धिजीवी हैं	33
दिल्ली	36

कुम्हार	38
पिता आए थे सपने में	41
बुरे समय में नींद	44
बजट	47
विश्वास नहीं होता है	50
साझेदार	54
चौकीदार	56
कला समय	60
रेडियो पर भजन	62
क्या कर लोगे	66
करतूत	67
एक दिन चुक जाओगे	69
भूख : चार रंग	71
मुंडेर पर कौआ	74

मुठभेड़	76
परमिट कोटा	77
शातिर दिमाग़	79
भाषा	81
छोटे पते के सहारे	84
कसौटी	87
लड़कियों का साइकिल स्टैण्ड	89
चुंबन झाग	92
खरबूजे	94
जर्जर नैया	96
नीलाम	98
सामने घाट	99
ससधर का दुःख	101
पपड़ी के नीचे	102

मुखिया जी	105
बाँके मोची	108
भूल-चूक किससे नहीं होती	111
साहब जी के द्वारे पर	116
मित्तन अपने गाँव का	123
माचिस की तीलियाँ	126
तुम्हारे ख़िलाफ़	129
जल प्रलय	131
छठ का पूआ	136
बाया को श्रद्धांजलि	139
बासमती गीत	142
कदली पत्रम्	145
गंग श्रद्धा	148
रोटी हूँ	150

व्यर्थ गए दोहे कबीर के 152

चंदन और साँप 156

रजाई 159

माँझी के बच्चों में कितनी हिम्मत है 162

सबको क्षमादान 165

बदलो जी 167

हमारी क़तारों में शामिल 169

साँझ होने पर 171

जी भर बात 173

आषाढ़ मेरी प्रेमिका 176

इन्द्रिय बोध 178

प्यार 180

सिमरिया 183